साप्ताहिक

डाक पंजीयनः म.प्र./भोपाल/4-479/2019-21

RNI-MPHIN/2015/72544

जागत गांव हमार

पंचायत की विकास गाथा, सरकार तक

चौपाल से भोपाल तक

भोपाल, सोमवार, 02 अगस्त 2021, वर्ष-7, अंक-18

भोपाल, इंदौर, उज्जैन, सागर, मुरैना से एक साथ प्रकाशित

पृष्ठ :-8, मूल्य :- 8 रुपए

भिंड में फसल मुआवजा घोटाला

» दो हल्का पटवारियों पर एफआईआर दर्ज, जांच भी हुई शुरू

» जिसने फसल बोई ही नहीं उनके खातों में डाल दिए 56 लाख रुपए

» मचा हड़कंपः जिले में चार गांव के तीन सौ किसानों का नाम

नीरज शर्मा

भिंड। जिले की गोहद जनपद में ओलावृष्टि की मुआवजा राशि वितरण में अफसरों से लेकर पटवारियों ने चेहतों को लाभ दिलाया। अपात्रों को मुआवजा बांट दिया गया। उन्होंने फसल तक नहीं बोई थी। जब यह मामला खुला तो दो पटवारियों के खिलाफ गोहद के तहसीलदार ने एफआईआर दर्ज करा दी। गोहद तहसीलदार के पटवारियों के खिलाफ ओलावृष्टि राशि में गबन की शिकायत से एक दिन पहले ही लहार विधायक और पूर्व मंत्री डॉ गोविंद सिंह ने भ्रष्टाचारी की कलई खोली थी। विधायक द्वारा लगाए गए आरोपों के बाद तहसीलदार ने रिपोर्ट दर्ज कराई। गोहद पुलिस ने दो पटवारियों के खिलाफ धोखाधड़ी का प्रकरण दर्ज किया है।

जांच के बाद होगी अफसरों से वसूली

पटवारियों ने 288 अपात्र किसानों के फर्जी दस्तावेज तैयार कर उनके खाते में 56 लाख 20 हजार 526 रुपए की मुआवजा राशि डाल दी। कैथोदा के किसान राजवीर सिंह की शिकायत कलेक्टर तक पहुंची। कलेक्टर ने जांच दल गठित कर पटवारियों को निलंबित किया था। अब विभाग उन खातों को चेक कर रहा है, जिनके खाते में पात्र किसानों का पैसा पहुंचा दिया है। जांच पूरी होते ही राशि की रिकवरी की जाएगी।

2020 में फसल हो गई थी बर्बाद

वर्ष 2020 में ओलावृष्टि के दौरान तुकेड़ा के हल्का झावलपुरा, धमसा और सर्वा के चक सर्वा, खेरिया रायजू में किसानों की सरसों व गेहूं की फसल नष्ट हो गई थी। 1 मई को किसानों को मुआवजा पहुंचाने के लिए सर्वा हल्का के पटवारी कुलदीप सिंह निवासी कुम्हरौआ भिंड और तुकेड़ा पटवारी निशांत खरे निवासी शताब्दीपुरम ग्वालियर से किसानों के खाते मांगे थे।

कांग्रेस विधायक बोले-दस करोड़ का गबन

कांग्रेस विधायक डॉ. गोविंद सिंह का आरोप है कि ओलावृष्टि से पीड़ित किसानों को राहत देने के लिए सरकार ने जनता के खजाने से 25 करोड़ 34 लाख 75 हजार 333 रुपए की राशि वितरण के लिए भेजी थी। राशि से 10 करोड़ की राशि का गोहद एसडीएम, तहसीलदार, नायब तहसीलदार, आरआई, पटवारियों ने बंदरवाट किया। यही नहीं, कार्रवाई से बचने 1.20 करोड़ की राशि वापस कर दी गई है। घोटाले के संबंध में विधानसभा में प्रश्न लगाने पर एक करोड़ 20 लाख की राशि कार्रवाई से बचने के लिए वापस की गई है। इससे भी गबन साबित हो गया है।

इनका कहना है

दोनों पटवारियों ने फर्जी तरीके से अपात्रों के खातों में सरकारी मुआवजा डलवा दिया। चारों गांवों में कुल 288 किसानों को अपात्र बनाकर लाभ दिलाया गया। जबकि राशि से 56 लाख 525 रुपए का पटवारी द्वारा चालान शासकीय कोष में जमा कराया गया। जिससे साबित हुआ कि पटवारियों ने जानबूझकर गलत खातों की सूचियां प्रस्तुत कर भुगतान करा लिया। जांच के बाद राशि की वसूली भी की जाएगी।

रामजीलाल वर्मा, तहसीलदार, गोहद

बड़ा सवाल..? 2022 तक कैसे होगी दोगुनी आय

मध्यप्रदेश के 74.6 लाख किसान कर्जदार

» संसद में ही सरकारी दावों की खुली पोल

» कर्जमाफी को लेकर सरकार की कोई भी योजना नहीं

अरविंद मिश्र, भोपाल

केंद्र सरकार देश के किसानों की आय दोगुनी करने के लिए कई योजनाओं का संचालन कर रही है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी कई मौकों पर कह चुके हैं कि सरकार किसानों की आय दोगुनी करने के लक्ष्य को हासिल करने के लिए पूरे मन से काम कर रही है। लेकिन संसद में पेश रिपोर्ट से सरकार के दावों की पोल खुल गई है। रिपोर्ट के अनुसार देश के 13,85,40,234 किसानों पर 16,80,366.77 करोड़ का कर्ज है। इसमें से मप्र के 74,64,946 किसानों पर 1,00,472 करोड़ और छग के 49,48,633 किसानों पर 29,330 करोड़ का कर्ज है। देश में एक तरफ किसान कृषि कानून के विरोध में एक साल से धरना दे रहे हैं। उधर, सरकार कानून वापस लेने को तैयार नहीं है। वहीं दूसरी तरफ सत्तारूढ़ भाजपा के नेता किसानों को समृद्ध बताकर उपहास उड़ा रहे हैं।

कर्जमाफी से इंकार

संसद में सरकार से सवाल पूछा गया कि क्या केंद्र सरकार किसानों के कर्ज को माफ करने की योजना बना रही है? इस पर लिखित में जवाब देते हुए केंद्रीय वित्त राज्यमंत्री भागवत किशनराव कराड ने बताया कि किसानों की कर्जमाफी को लेकर फिलहाल सरकार की कोई भी योजना नहीं है।

» मप्र के 74,64,946 किसानों पर 1,00,472 करोड़ कर्ज

» छग के 49,48,633 किसानों पर 29,330 करोड़ कर्ज

» देश के अन्नदाताओं पर करीब 17 लाख करोड़ का कर्ज

» तमिलनाडु के किसानों पर 1.89 लाख करोड़ का कर्ज

» आंध्र प्रदेश के किसानों पर 1.69 लाख करोड़ का कर्ज

» सर्वाधिक कर्ज लेने वालों में तीसरे स्थान पर उत्तर प्रदेश

तमिलनाड़ सबसे बड़ा कर्जदार

देश के किसानों पर इस समय 16.8 लाख करोड़ का कर्ज है। साथ ही सरकार ने संसद में किसानों के कर्ज से जुड़ा पूरा डाटा भी पेश किया जिसमें सभी राज्यों के किसानों पर कर्ज का लेखा-जोखा मौजूद है। सबसे ज्यादा कर्ज में डूबे किसान वाले राज्यों में तमिलनाडु सबसे ऊपर है। तमिलनाडु के किसानों पर 1.89 लाख करोड़ का कर्ज है।

पंजाब ने माफ किया 590 करोड़

पंजाब सरकार ने हाल ही में किसानों के 590 करोड़ के कर्ज को माफ करने का ऐलान किया है। ये कर्जमाफी मजदूरों और भूमिहीन कृषक समुदाय के लिए कृषि कर्ज माफी योजना के तहत करने की घोषणा की गई है। पंजाब में इस योजना के तहत अब तक 5.64 लाख किसानों का 4,624 करोड़ का कर्ज माफ किया जा चुका है।

पांच राज्यों के किसानों पर सबसे ज्यादा कर्ज

तमिलनाडु	189623.56 करोड़ का कर्ज
आंध्र प्रदेश	169322.96 करोड़ का कर्ज
उत्तर प्रदेश	155743.87 करोड़ का कर्ज
महाराष्ट्र	153658.32 करोड़ का कर्ज
कर्नाटक	143365.63 करोड़ का कर्ज

इन पांच राज्यों में सबसे ज्यादा किसान कर्जदार

तमिलनाडु	1,64,45,864 किसान कर्जदार
उत्तर प्रदेश	1,43,53,475 किसान कर्जदार
आंध्र प्रदेश	1,20,08,351 किसान कर्जदार
कर्नाटक	1,08,99,165 किसान कर्जदार
महाराष्ट्र	1,04,93,252 किसान कर्जदार

इन 5 प्रदेशों के किसानों पर सबसे कम कर्ज

दमन-दीव	40 करोड़ का कर्ज
लक्षद्वीप	60 करोड़ का कर्ज
सिक्किम	175 करोड़ का कर्ज
लद्दाख	275 करोड़ का कर्ज
मिजोरम	554 करोड़ का कर्ज

इन 5 राज्यों में सबसे कम संख्या में किसान कर्जदार

दमन-दीव	1,857 किसान
लक्षद्वीप	17,873 किसान
सिक्किम	21,208 किसान
लद्दाख	25,781 किसान
दिल्ली	32,902 किसान

अब अपनी जमीन पर पौधा लगाएं और पैसा कमाएं

संवाददाता, भोपाल

प्रदेश में निजी भूमि पर पौधरोपण को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से प्रस्तावित मध्यप्रदेश वृक्षारोपण प्रोत्साहन विधेयक-2021 पर सभी स्टेक होल्डर्स से एक महीने में सुझाव मांगे गए हैं। यह योजना नगरपालिक क्षेत्रों को छोड़कर पूरे प्रदेश में लागू होगी। विधेयक में प्रावधान किया गया है कि उत्पादक द्वारा रोपे गए पौधों के संवर्धन और प्रबंधन की पद्धति अपनी मर्जी से जैसे उचित समझे अपनाया जा सकेगा। उत्पादक संबंधित ग्राम पंचायत के भीतर किसी भी स्थान पर, जिसमें पौधरोपण किया गया, वहीं काष्ठ की टॉल स्थापित कर सकेगा। काष्ठ टॉल में इमारती लकड़ी की प्र-संस्करण इकाई स्थापित करने के लिए सशर्त सुविधा दी जाएगी।

इस विधेयक में आदिवासी वर्गों के हित संरक्षण को ध्यान में रखते हुए उनके खेतों में खड़े वृक्षों को काटने और बिक्री के नियम यथावत रखे गए हैं। विनिर्दिष्ट वनोपज सागौन और साल का शासकीय ई-पोर्टल के माध्यम से खेत या टॉल से ही बेचने और स्वयं बोली स्वीकार करने और सीधे भुगतान लेने की छूट का प्रावधान भी रखा गया है। सागौन एवं साल विनिर्दिष्ट प्रजाति के वृक्षों से प्राप्त काष्ठ के परिवहन के लिए अनुज्ञा-पत्र जरूरी होगा। शेष प्रजाति के वृक्षों के परिवहन अनुज्ञा-पत्र से छूट रहेगी, परंतु हितग्राही यदि चाहे तो स्वयं टीपी पोर्टल से निकाल सकेगा।

अपराध नियंत्रण की दृष्टि से वन सीमा से लगी ग्राम पंचायतों से काष्ठ परिवहन के लिए अनुज्ञा-पत्र लेना अनिवार्य होगा। आमजन के लिए प्रस्तावित मध्यप्रदेश वृक्षारोपण विधेयक-2021 का प्रारूप mp.gov.in और वन विभाग की वेबसाइट पर उपलब्ध है।

केंद्रीय कृषि मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर ने कहा

खेती को समृद्ध करने वाले हैं कृषि सुधार कानून

संवाददाता, भोपाल/दिल्ली

किसानों के सशक्तिकरण के लिए नए कृषि सुधार कानून जैसे ठोस कदम खेती को समृद्ध करने वाले हैं। ये कृषि विकास में मील का पत्थर साबित होंगे। कुल 86 प्रतिशत छोटे-मझौले किसान इनके माध्यम से और मजबूत होंगे, जिससे देश की भी ताकत बढ़ेगी। सरकार गांव-गरीब-किसान-किसानी की प्रगति के लिए प्राथमिकता के साथ काम कर रही है। इस दिशा में कई योजनाएं प्रारंभ की गई हैं। यह बात केंद्रीय कृषि मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर ने मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ स्थित कृषि विज्ञान केंद्रों (केवीके) की 28वीं क्षेत्रीय कार्यशाला के उद्घाटन समारोह के दौरान कही। उन्होंने कहा कि देशभर में गांव-गांव अधोसंरचना विकसित करने के लिए एक लाख करोड़ रुपए के कृषि आधारभूत संरचना कोष सहित आत्मनिर्भर भारत अभियान में कुल डेढ़ लाख करोड़ से अधिक के पैकेज शुरू किए गए हैं। हर सप्ताह मंत्रालय में इसकी प्रगति के लिए बैठकें होती हैं। इसी तरह, 6,850 करोड़ रुपए की लागत से 10 हजार नए किसान उत्पादक संगठन (एफपीओ) के गठन की योजना तथा किसानों के सशक्तीकरण के लिए नए कृषि सुधार कानून जैसे ठोस कदम कृषि को समृद्ध करने वाले हैं।

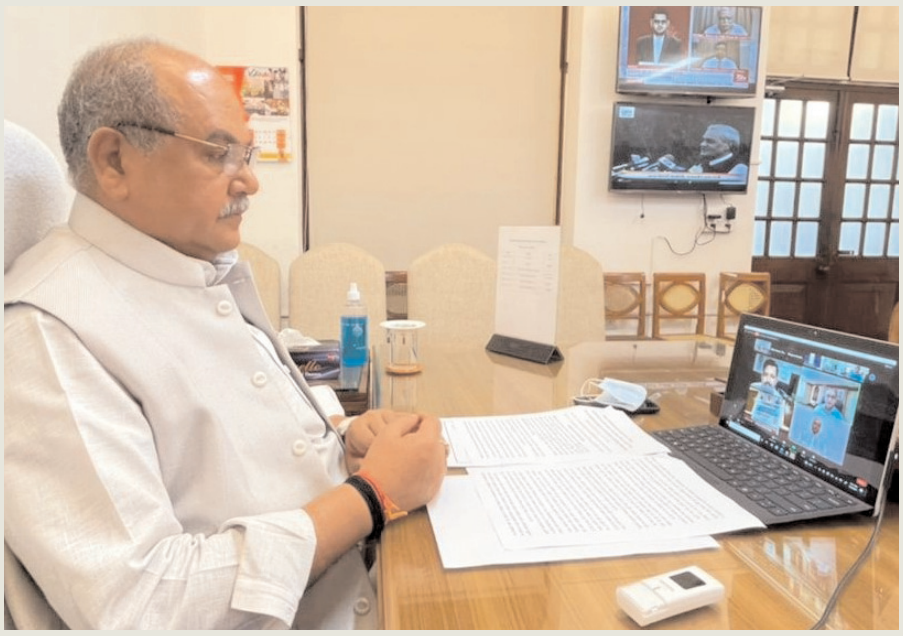

जज्बे से काम कर रहा केवीके

कृषि मंत्री ने कहा कि कोरोना संकट काल में भी केवीके के वैज्ञानिक, सूचना-संचार तकनीकों एवं कृषि विभाग के साथ मिलकर किसानों को उचित तकनीकों द्वारा लाभ पहुंचा रहे हैं, जो सराहनीय है। पशु धन एवं मछली पालन के विकास के लिए भी हमारे केवीके पूरे जज्बे के साथ कार्य कर रहे हैं। कृषि एवं सभी संबद्ध क्षेत्रों की सतत प्रगति तथा किसानों की आय बढ़ाने के लिए काम कर रहे हैं।

किसानों को मिल रही मदद

वर्तमान में 723 केवीके, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) की इकाइयों, गैर सरकारी संस्थानों और राज्य कृषि विश्वविद्यालयों द्वारा विभिन्न कार्यक्रम चलाए जा रहे है, जिनसे किसानों को बहुत मदद मिल रही है।

25 राज्यों में कड़कनाथ का पालन

तोमर ने कहा कि देशभर के कुल उत्पादन में मध्य प्रदेश से मुख्य रूप से दलहन, गेहूं व सोयाबीन तथा छत्तीसगढ़ से धान की पैदावार का महत्वपूर्ण योगदान है। संतोष की बात है कि केवीके के माध्यम से क्लस्टर अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन व सीड हब द्वारा दलहन की उत्पादकता में बढ़ोतरी की जा रही है। प्रदेश में सोयाबीन फसल के 60 लाख हेक्टेयर में से 35 लाख हेक्टेयर पर ऊंची क्यारी तकनीक का उपयोग करके जल संरक्षण द्वारा उत्पादकता बढ़ाई जा रही है। वहीं कड़कनाथ मुर्गी पालन केवीके के प्रयासों से 25 राज्यों में हो रहा है और विदेशों से भी मांग है।

योजना में गड़बड़ी! केंद्र को लौटाने पड़ेंगे 58 करोड़

» जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए केंद्र सरकार ने 110 करोड़ की योजना की थी मंजूर

» कांग्रेस सरकार के समय बनाई थी विधायकों की समिति, पर नहीं हुई कोई कार्रवाई

प्रशासनिक संवाददाता, भोपाल

प्रदेश में जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए परंपरागत तौर-तरीकों से खेती करने वाले अनुसूचित जनजाति के किसानों को प्रशिक्षण देने से लेकर प्रसंस्करण आदि कार्यों के क्रियान्वयन में गड़बड़ी सरकार को भारी पड़ रही है। केंद्र सरकार जनजातीय कार्य विभाग से राशि का उपयोगिता प्रमाण पत्र योजना के प्रविधानों के मुताबिक मांग रहा है, पर इसका पालन ही नहीं हुआ। इसके कारण करीब 58 करोड़ रुपए का मामला उलझ गया है। योजना में गड़बड़ी के आरोप कांग्रेस सरकार के समय पार्टी के ही विधायकों ने लगाए थे। इसको लेकर विधायकों की समिति भी गठित हुई थी लेकिन यह निष्क्रिय है।

13 जिलों में थी योजना

प्रदेश के मंडला, बालाघाट, डिंडोरी, अनूपपुर, शहडोल, उमरिया, ग्वालियर, दतिया, श्योपुर, मुरैना, शिवपुरी, गुना, अशोकनगर जिले में योजना लागू हुई थी। जनजातीय कार्य विभाग ने राशि उपयोग करने के लिए कृषि विभाग को दी थी। योजना के तहत राशि का उपयोग बायोलॉजिकल नाइट्रोजन, हरी खाद के प्रयोग के लिए सहायता, तरल जैविक उर्वरक सहायता, प्रसंस्करण आदि के लिए होना था। किसानों को जो खाद दी गई, वो घटिया गुणवत्ता की थी।

मांग रहे उपयोगिता का प्रमाण

उधर, जनजातीय कार्य विभाग 58 करोड़ रुपए केंद्र सरकार को लौटाने के पक्ष में है, क्योंकि बार-बार योजना के प्रावधान के अनुसार उपयोगिता प्रमाण पत्र मांगा जा रहा है। इसको लेकर वित्त विभाग से विचार-विमर्श का दौर शुरू हो गया है। पिछले दिनों मुख्य सचिव इकबाल सिंह बैंस ने भी इस मामले में बैठक की थी।

समिति की नहीं हुई बैठक

पुष्पराजगढ़ विधानसभा क्षेत्र से विधायक फुंदेलाल सिंह मार्को ने इसे लेकर ध्यानाकर्षण लगाया था। सदन में मामला आया तो तत्कालीन अध्यक्ष एनपी प्रजापति ने समिति बनाकर जांच कराने के निर्देश दिए थे। कृषि विभाग ने मार्को के अलावा सुनील सराफ, योगेंद्र सिंह, प्रताप ग्रेवाल, विजय राघवेंद्र सिंह, नीलांशु चतुर्वेदी, संजय उइके सहित अन्य की समिति गठित की थी, लेकिन इसकी बैठकें ही नहीं हुईं। पिछले दिनों आनलाइन बैठक होने की सूचना दो घंटे पहले दी गई थी। इसके बाद क्या हुआ कोई जानकारी नहीं है।

भोपाल के धमर्रा में किसान को 23 लाख की चपत

भोपाल। गुनगा थाना पुलिस ने एक किसान की शिकायत पर क्षेत्र के प्रतिष्ठित अनाज व्यापारी भाइयों के खिलाफ 23 लाख रुपए से अधिक की धोखाधड़ी करने का केस दर्ज किया है। आरोपी फरार हैं। आरोपी व्यापारी बंधु कई अन्य किसानों से भी इस तरह की ठगी कर चुके हैं।

» व्यापारी बंधुओ ने वेयर हाउस में रखा 1500 क्विंटल अनाज बेच दिया

» ज्यादा मुनाफे का लालच देकर किसान का माल वेयरहाउस में रखवाया।

» आरोपियों ने रसीद अपने नाम से बनवाई, बाद में चुपचाप अनाज बेचा

गुनगा थाना प्रभारी रमेश राय ने बताया कि ग्राम धमर्रा निवासी अजय तिवारी संपन्न किसान हैं। उनका परिचय धमर्रा के अनाज व्यापारी कुलदीप भार्गव और उनके भाई सुदीप भार्गव से था। ये भार्गव बंधु बैरसिया कृषि उपज मंडी के लाइसेंसधारी आढतिया हैं। वर्ष-2018 में कुलदीप और सुदीप ने अजय तिवारी को झांसा दिया कि गेहूं, सोयाबीन और चने को वेयर हाउस में सुरक्षित रख देते हैं। भाव बढ़ने पर अनाज बेचने पर अधिक मुनाफा होगा। अजय तिवारी ने सहमति जताई तो धमर्रा स्थित वेयर हाउस में 800 क्विंटल सोयाबीन, 400 क्विंटल चना और 300 क्विंटल गेहूं रखवा दिया गया। शातिर दिमाग कुलदीप और सुदीप ने वेयर हाउस में रखे अनाज की रसीद अपने नाम पर बनवा ली थी। इसके बाद मौका देखर उन्होंने पूरा अनाज बेच दिया और गायब हो गए। अजय तिवारी ने पहले भार्गव बंधुओं की तलाश की। उनके परिवार वालों को घटना के बारे में बताया भी, लेकिन जब समझौते का कोई रास्ता नहीं निकला तो थाने में शिकायत दर्ज करा दी।

किसान भी कर रहे तलाश

शिकायत की जांच के बाद पुलिस ने आरोपित कुलदीप और सुदीप भार्गव के खिलाफ धोखाधड़ी का केस दर्ज कर उनकी तलाश शुरू कर दी है। पिछले दिनों बैरसिया थाना पुलिस ने भी एक किसान की शिकायत पर कुलदीप भार्गव के खिलाफ धोखाधड़ी का केस दर्ज किया था। कुछ अन्य किसान भी भार्गव बंधुओं को अपने रुपए वापस करने के लिए तलाश रहे हैं।

नई शिक्षा नीति के एक साल पर पीएम ने की घोषणा, बोले, 11 भाषाओं में होगी इंजीनियरिंगी की पढ़ाई

अब गांव में भी प्ले स्कूल

भोपाल/नई दिल्ली। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति को मंजूरी मिले जुलाई में माह में एक साल पूरा हो गया। इस मौके पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एजुकेशन सेक्टर से जुड़े लोगों, शिक्षकों और विद्यार्थियों से सीधा संवाद किया। इस दौरान उन्होंने दो बड़ी घोषणाएं भी की। पहला कि गांवों में भी बच्चों को प्ले स्कूल की सुविधा मिलेगी। अब तक यह कॉन्सेप्ट शहरों तक सीमित है। दूसरा कि इंजीनियरिंग के कोर्स का 11 भारतीय भाषाओं में ट्रांसलेशन के लिए टूल डेवलप किया जा चुका है। इससे इन भाषाओं के छात्रों को पढ़ाई में आसानी होगी।

1. विद्या प्रवेश प्रोग्राम लॉन्च

विद्या प्रवेश प्रोग्राम लॉन्च किया गया। अब तक प्ले स्कूल का कॉन्सेप्ट बड़े शहरों तक सीमित है। विद्या प्रवेश के जरिए यह गांव-गांव जाएगा। ये प्रोग्राम आने वाले समय में यूनिवर्सल प्रोग्राम के तौर पर लागू होगा और राज्य भी इसे जरूरत के हिसाब से लागू करेंगे। देश के किसी भी हिस्से में अमीर हो या गरीब, उसकी पढ़ाई खेलते और हंसते हुए और आसानी से होगी। शुरुआत मुस्कान के साथ होगी तो आगे कामयाबी का रास्ता भी आसानी से पूरा होगा। इंजीनियरिंग के कोर्स का 11 भारतीय भाषाओं में ट्रांसलेशन के लिए एक टूल डेवलप किया जा चुका है। साथ ही मुझे खुशी है कि 8 राज्यों के 14 इंजीनियरिंग कॉलेज 5 भारतीय भाषाओं हिंदी, तमिल, तेलुगु, मराठी और बांग्ला में इंजीनियरिंग की पढ़ाई शुरू करने जा रहे हैं।

2. नई योजनाएं अहम भूमिका निभाएंगी

एक साल में शिक्षा नीति को आधार बनाकर अनेक बड़े फैसले लिए गए हैं। इसी कड़ी में नई योजनाओं की शुरुआत का सौभाग्य मिला है। ये महत्वपूर्ण अवसर ऐसे समय में आया है, जब देश आजादी के 75 साल का महोत्सव बना रहा है। 15 अगस्त को हम आजादी के 75वें साल में प्रवेश करने जा रहे हैं। एक तरह से ये नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति का इम्प्लिमेंटेशन आजादी के महापर्व का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है। नई योजनाएं नए भारत के लिए अहम भूमिका निभाएंगी। हम कितना आगे जाएंगे, कितना ऊंचा जाएंगे, ये इस बात पर निर्भर करेगा कि हम अपने युवाओं को वर्तमान में कैसी शिक्षा दे रहे हैं, कैसी दिशा दे रहे हैं, इसीलिए मैं मानता हूं कि भारत की नई शिक्षा नीति राष्ट्र निर्माण के महायज्ञ के बड़े फैक्टर में से एक है। इसे आधुनिक बनाया गया है और फ्यूचर रेडी रखा गया है।

3. पढ़ाई का ढंग बदला

हमारे साथ मौजूद युवाओं के सपनों और उम्मीदों के बारे में पूछेंगे तो उनके मन में नयापन और नई ऊर्जा दिखाई देगी। युवा बदलाव के लिए पूरी तरह तैयार है, वो इंतजार नहीं करना चाहता है। कोरोना काल में कैसे हमारी शिक्षा व्यवस्था के सामने इतनी बड़ी चुनौती आई। पढ़ाई का ढंग बदल गया, लेकिन विद्यार्थियों ने तेजी से इस बदलाव को एडॉप्ट कर लिया है। ऑनलाइन एजुकेशन अब एक सहज चलन बन गया है। शिक्षा मंत्रालय ने भी इसके लिए प्रयास किए हैं। मंत्रालय ने दीक्षा प्लेटफॉर्म, स्वयं पोर्टल शुरू किया। छात्र पूरे देश से इनका हिस्सा बन गए। पिछले एक साल में 2300 करोड़ से ज्यादा हिट होना ये बताता है कि ये कितना उपयोगी प्रयास रहा है। आज भी हर दिन इसमें पांच करोड़ हिट हो रहे हैं।

मोदी के आठ मंत्र

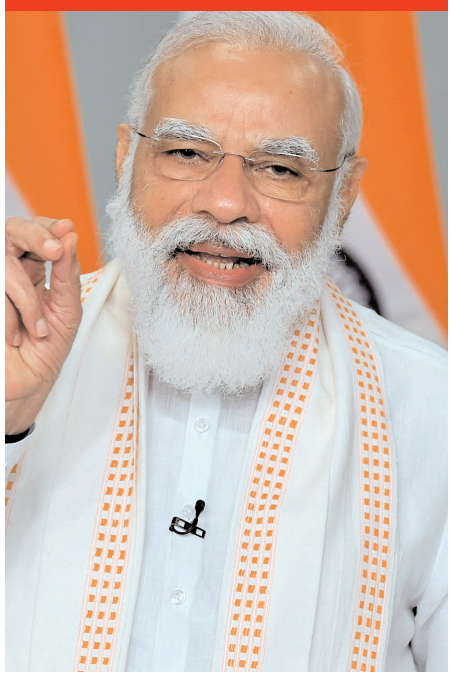

4. युवा को पुराने बंधनों से मुक्ति चाहिए

21वीं सदी का आज का युवा अपनी व्यवस्थाएं और दुनिया अपने हिसाब से बनाना चाहता है। उसे एक्सपोजर चाहिए। उसे पुराने बंधनों और पिंजरों से मुक्ति चाहिए। आज छोटे-छोटे गांवों-कस्बों से निकले युवा कैसे-कैसे कमाल कर रहे हैं। इन्हीं दूरदराज इलाकों से आने वाले युवा आज टोक्यो ओलिंपिक्स में देश का झंडा बुलंद कर रहे हैं। भारत को नई पहचान दे रहे हैं। करोड़ों युवा अलग-अलग क्षेत्रों में असाधारण काम कर रहे हैं।

5. परीक्षा के डर से मुक्ति मिलेगी

नई व्यवस्था में एक ही क्लास और एक ही विषय में जकड़े रहने की बाध्यता को खत्म कर दिया गया है। युवा अपनी रुचि, सुविधा से कभी भी एक स्ट्रीम को चुन सकता है और छोड़ सकता है। कोर्स सिलेक्ट करते समय ये डर नहीं रहेगा कि डिसीजन गलत हो गया तो क्या होगा। आने वाले समय में परीक्षा के डर से भी मुक्ति मिलेगी। ये डर निकलेगा तो नए इनोवेशन का दौर शुरू होगा और संभावनाएं असीम होंगी।

6. एक कदम आगे का सोचना होगा

ये माना जाता था कि अच्छी पढ़ाई के लिए विदेश जाना होगा, लेकिन विदेशों से स्टूडेंट भारत आएं, ये हम देखने जा रहे हैं। देश के डेढ़ सौ से ज्यादा विश्वविद्यालयों में ऐसी व्यवस्था की जा चुकी है। हायर एजुकेशन इंस्टिट्यूट अंतरराष्ट्रीय स्तर पर रिसर्च में आगे बढ़ें, इसके लिए गाइडलाइन जारी की गई है। आज बन रही संभावनाओं को साकार करने के लिए हमारे युवाओं को दुनिया से एक कदम आगे बढ़ना होगा, एक कदम आगे का सोचना ही होगा। आत्म निर्भर भारत का रास्ता स्किल डेवलपमेंट और टेक्नोलॉजी से जाता है। एक साल में 1200 से ज्यादा उच्च शिक्षा संस्थानों में स्किल डेवलपमेंट से जुड़े सैकड़ों कोर्सेज को मंजूरी दी गई। बापू कहा करते थे कि राष्ट्रीय शिक्षा को सच्चे अर्थों में राष्ट्रीय होने के लिए राष्ट्रीय परिस्थितियों में रिफ्लेक्ट होना चाहिए। अब हायर एजुकेशन में मीडियम ऑफ इंस्ट्रक्शन स्थानीय भाषा भी विकल्प होगी।

7. भारतीय साइन लैंग्वेज को मिला दर्जा

तीन लाख से ज्यादा बच्चे ऐसे हैं, जिन्हें सांकेतिक भाषाओं की जरूरत होती है। इसे समझते हुए भारतीय साइन लैंग्वेज को सब्जेक्ट का दर्जा दिया गया है। छात्र इसे भाषा के तौर पर भी पढ़ पाएंगे। हमारे दिव्यांग साथियों को मदद मिलेगी। आप भी जानते हैं कि किसी भी स्टूडेंट को पूरी पढ़ाई में प्रेरणा अध्यापक से मिलती है। जो गुरु से प्राप्त नहीं हो सकता, वो कहीं भी प्राप्त नहीं हो सकता। ये हमारे यहां कहा जाता है। ऐसा कुछ भी नहीं है, जो अच्छा गुरु मिलने के बाद दुर्लभ होगा।

8.जरूरतों के हिसाब से ट्रेनिंग मिलेगी

लॉन्च हुआ निष्ठा 2.0 भी इस दिशा में अहम भूमिका निभाएगा। देश के शिक्षकों को आधुनिक जरूरतों के हिसाब से ट्रेनिंग मिलेगी। शिक्षकों से कहना चाहता हूं कि इन प्रयासों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लें। सरकार ने नई शिक्षा नीति पर केंद्र और राज्य के सहयोग से जीडीपी का 6 फीसदी हिस्सा खर्च करने का लक्ष्य रखा है।

गांवों में नियुक्त किए जाएंगे कृषक मित्र

भोपाल। किसानों को खेती की तकनीकी सलाह और कृषि से संबंधित शासन की योजनाओं की जानकारी उपलब्ध कराने के लिए प्रदेश के गांवों में कृषि मित्र नियुक्त किए जा रहे हैं। इनके चयन की प्रक्रिया नए सिरे से शुरू हो चुकी है। राज्य सरकार के निर्देशानुसार ग्रामीण स्तर पर कृषक तथा प्रसार तंत्र के बीच जीवंत संबंध स्थापित करने की दृष्टि से दो आबाद ग्रामों पर एक कृषक मित्र की नियुक्ति की जाएगी, जो स्वप्रेरणा से कार्य करने के लिए तैयार हों। कृषक ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारी या पंचायत सचिव के जरिए 15 अगस्त के पहले आवेदन किए जा सकते हैं।

यह होगी योग्यता

कृषक मित्र के लिए आवश्यक है कि वह किसी भी शासकीय, अर्द्धशासकीय, अशासकीय अथवा किसी लाभ के पद की सेवाएं प्राप्त नहीं कर रहा हो। संबंधित दोनों ग्रामों में से किसी एक का निवासी हो। स्वयं की कृषि भूमि हो। हाईस्कूल पास हो और आवेदक की न्यूनतम आयु 25 वर्ष हो। कृषक मित्र पर किसी भी प्रकार के आपराधिक प्रकरण में दोष सिद्ध ना हो। इस काम और पद के लिए 30 प्रतिशत महिला कृषकों को यथासंभव प्राथमिकता दी जाएगी। ग्राम सभा से अनुमोदन की कार्रवाई 15 अगस्त को की जाएगी।

किसानों के लिए मददगार

गौरतलब है कि किसानों के लिए कृषि विभाग से संबंधित कई शासकीय योजनाएं हैं, जिनके बारे में ग्रामीणों को उचित जानकारी ही नहीं मिल पाती। कृषि विभाग का मैदानी अमला और ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारी भी कई बार यह जानकारी गांव तक नहीं पहुंचा पाते। इस कारण कई पात्र और जरूरतमंद किसान भी सरकार की इन योजनाओं का लाभ लेने से वंचित रह जाते हैं। ऐसे में यह कृषक मित्र किसानों के लिए मददगार साबित हो सकते हैं।

रेलवे कोच फैक्टरी की कैंटीन से निकले ग्रीन वेस्ट बनेगी जैविक खाद

» भोपाल में अगर पायलट प्रोजेक्ट सफल रहा तो दूसरी जगह भी बनेगा

» निशातपुरा में प्लांट अगस्त के पहले हफ्ते में बनकर हो जाएगा तैयार

संवाददाता, भोपाल

भोपाल के निशातपुरा कोच फैक्टरी में पहली बार कंटीन में बनने वाले खाने के ग्रीन वेस्ट और परिसर में लगे पेड़-पौधे से निकलने वाले सूखे कचरे को डी-कंपोस्ड करके जैविक खाद बनाई जाएगी। इसके लिए कोच फैक्ट्री परिसर में खाद बनाने का प्लांट लगाया गया है। इस पायलट प्रोजेक्ट प्लांट को कोच फैक्ट्री से निकलने वाले कबाड़ से बनाया गया है। रेलवे में लगने वाले आइल के ड्रम, कंटेनर आदि का प्रयोग किया है। अब इस कचरे का निष्पादन और उपयोग वैज्ञानिक पद्धति से किया जाएगा। यहां से तीन मीट्रिक टन ग्रीन वेस्ट निकलता है। यहां लगने वाले प्लांट से हर माह दो क्विंटल सॉलिड खाद और 15 हजार लीटर लिक्विड खाद निकलेगी।

फैक्ट्री के कबाड़ से जैविक खाद बनाने का प्लांट बनाया गया है। यहां पर कोई भी सामान बारह से नहीं लाया गया। इस प्लांट को बनाने का काम 80 प्रतिशत तक पूरा हो गया है। 20 प्रतिशत काम अगस्त के पहले हफ्ते में पूरा हो जाएगा। इस प्लांट के शुभारंभ की तारीख अभी तय नहीं की है। वरिष्ठ अधिकारियों के निर्देश के बाद इसका शुभारंभ होगा।

कुमार आशीष, चीफ इंजीनियर, कोच फैक्ट्री निशातपुरा

» रेलवे कॉलोनियों से एकत्रित होगा कचरा

» 03 मीट्रिक टन कचरे का होता है उपयोग।

» 05 मीट्रिक टन एकत्रित करने की है योजना।

» 30 दिन लगते हैं सॉलिड खाद बनने में।

पेड़-पौधों में होगा खाद का उपयोग

सार्थक संस्था के डायरेक्टर इम्तियाज अली का कहना है कि यहां पर हर दिन निकलने वाले गीले और सूखे कचरे को छोटे छोटे टुकड़ों में काटा जाएगा। इसका पल्प बनाकर बड़े ड्रम में डाला जाएगा। ड्रम को एक पाइप लाइन के माध्यम से अन्य ड्रम से जोड़ा गया है। इसमें से बिना ऑक्सीजन के पल्प सड़ने की प्रक्रिया होगी। जिससे एक लिक्विड तैयार होगा। जो पाइप से ड्रम में चला जाएगा। फिर सॉलिड कचरा 30 दिन में खाद का रूप ले लेता है। इस खाद को छान कर परिसर में लगे पेड़-पौधों में डाला जाएगा। वहीं लिक्विड खाद को परिसर में लगे पौधों को पानी में मिलाकर सिंचित किया जाएगा।

मप्र के पास टाइगर स्टेट का गौरवशाली ताज

ऋषभ जैन,
जनसंपर्क अधिकारी

अखिल भारतीय स्तर पर तीन साल पहले हुई बाघ गणना में 526 बाघों के साथ पहले स्थान पर काबिज रहकर मध्यप्रदेश को टाइगर स्टेट का दर्जा मिला है। इस साल होने वाली गणना के प्रारम्भिक संकेतों के अनुसार इस बार भी मध्यप्रदेश को टाइगर स्टेट के रूप में मान्यता मिलने की प्रबल संभावना है। वर्ष 2010 और 2014 की गणना में कर्नाटक स्टेट के सर्वाधिक बाघों की संख्या के साथ पहले स्थान पर रहने को छोड़ दें तो मध्यप्रदेश के पास ही पिछले दशक में टाइगर स्टेट का दर्जा रहा है।

अखिल भारतीय स्तर पर तीन साल पहले हुई बाघ गणना में 526 बाघों के साथ पहले स्थान पर काबिज रहकर मध्यप्रदेश को टाइगर स्टेट का दर्जा मिला है। इस साल होने वाली गणना के प्रारम्भिक संकेतों के अनुसार इस बार भी मध्यप्रदेश को टाइगर स्टेट के रूप में मान्यता मिलने की प्रबल संभावना है। वर्ष 2010 और 2014 की गणना में कर्नाटक स्टेट के सर्वाधिक बाघों की संख्या के साथ पहले स्थान पर रहने को छोड़ दें तो मध्यप्रदेश के पास ही पिछले दशक में टाइगर स्टेट का दर्जा रहा है। प्रदेश सरकार ने वन्य-प्राणी संरक्षण सुनिश्चित करने के लिए कई नवाचारों को लागू किया, जिनकी बदौलत मध्यप्रदेश टाइगर स्टेट की प्रक्रिया का आधार स्तंभ बना। पिछले डेढ़ दशक में बाघों और अन्य वन्य-प्राणियों के लिए आवास क्षेत्र की सुविधा कराने के लिए संरक्षित क्षेत्रों से 167 ग्रामों का मुकम्मबल स्थान पर पुनर्स्थापन कराया गया। दुर्गम वन क्षेत्रों के अंतर्गत न्यूनतम सुविधाओं के साथ रह रही 15 हजार से ज्यादा परिवार इकाइयों को वनों से बाहर लाया जाकर ग्राम-नगरों में बसाया गया। नतीजा यह हुआ कि वन्य-प्राणियों को व्यवधान रहित स्वछंद रूप से रहवास मिल गया। साथ ही वनवासियों की माली हालत में भी सुधार हुआ। इन तमाम नवाचारों में राज्य सरकार ने 900 करोड़ की राशि उपलब्ध कराई गई। प्रदेश के बाघ न केवल टाइगर रिजर्व में है बल्कि अन्य क्षेत्रीय वन मंडलों अपितु भोपाल जैसे बड़े शहरों की सीमा में भी अन्य प्राणी की तरह विचरण करते पाए जाते हैं। वर्ष 2018 में पन्ना से बाघों का अस्तिव ही समाप्त हो गया था। वन विभाग द्वारा बाघ संरक्षण के लिए सक्रिय पहल की गई, जिसमें बाघों को अन्य संरक्षित क्षेत्रों से लाकर पन्ना टाइगर रिजर्व में पुनर्स्थापित किया गया। पिछले 9 वर्ष की सतत प्रक्रिया के कारण आज पन्ना टाइगर रिजर्व पुराने वैभव की ओर लौट चुका है। यहां 20 से ज्यादा वयस्क बाघ और 15 अवयस्क बाघ/शावक मौजूद हैं। सम्पूर्ण पन्ना लैंड स्केप में शावकों सहित तकरीबन 50 बाघ उपलब्ध हैं। प्रदेश में वर्ष 2005-06 में बिछड़े अनाथ शावकों को उनके प्राकृतिक रहवास में मुक्त करने की नई पहल की शुरूआत की गई। इससे अनाथ बाघ शावक चिड़िया घर पहुंच जाते थे। उनके वयस्क होते ही प्राकृतिक आवास में मुक्त किया जाना संभव हो सका। कान्हा टाइगर रिजर्व के घोरेला एन्क्लोजर में 9 बाघ शावकों को वयस्क होने पर मुक्त किया जा चुका है। प्रदेश को मिली इस सफलता को पूरी दुनिया में घोरेला मॉडल के रूप में प्रसिद्धि मिली है। भारत में बाघों की गणना हरेक 4 साल में की जाती है। इसके तीन चरण निर्धारित हैं। प्रथम चरण में बाघों, अन्य मांसाहारी तथा बड़े शाकाहारी प्राणियों के चिन्ह अर्थात उनके पंजों के निशान, उनकी विष्ठा, खरोंच के निशान और उनके द्वारा किए गए शिकार आदि के आंकड़े एकत्रित किए जाते हैं। इस बाघ ऑकलन को फेस वन कहा जाता है। यह प्रक्रिया एक सप्ताह तक चलती है। वन कर्मचारी इन सातों दिन जंगलों में भ्रमण कर वन्य-प्राणियों की उपस्थिति के चिन्ह पहले तीन दिन और अगले तीन दिन वन्य-प्राणियों की प्रत्यक्ष उपस्थिति की संख्या एकत्रित करते हैं। द्वितीय चरण में वैज्ञानिकों द्वारा प्रयोगशालाओं में बाघ आकलन किया जाता है। वैज्ञानिक सेटेलाईट द्वारा एकत्र किए गए आंकड़ों का अध्ययन कर बाघ के रहवास क्षेत्र की स्थिति के बारे में आंकड़े जुटाते हैं। तीसरे चरण में कैमरा ट्रेपिंग की जाकर बाघों की उपस्थिति के चित्र लिए जाते हैं। इन तीन चरणों में मिले आंकड़े और सबूतों के सांख्यिकी विश्लेषण से किसी क्षेत्र में बाघों की संख्या का आकलन निकाला जाता है। अखिल भारतीय बाघ गणना में सम्पूर्ण भारत में तकरीबन 30 हजार बीटो में गणना कार्य किया जाता है। इसमें 9 हजार बीट केवल मध्यप्रदेश में ही मौजूद हैं। यह एक बहुत श्रम साध्य और व्यापक कार्य है। प्रदेश के वन विभाग ने इस चुनौती को अंगीकार करते हुए वर्ष 2017 से अपनी तैयारियों को अंजाम देना शुरू कर दिया। इसके अंतर्गत वन रक्षकों के कई चरण आयोजित कर उन्हें इसके काबिल बनाया गया। इस तरह दक्षतापूर्ण तरीके से दुष्कर कार्य की गणना कराई जाती है। बाघ सभी को भयभीत करने वाला और शक्तिशाली जन्तु के रूप में जाना जाता है। इसकी दहाड़ और गुर्राहट भयानक के साथ डराने वाली होती है। तीन

किमी की रेंज तक इसकी दहाड़ सुनाई देती है। बाघ के पिछले पैर आगे वाले पैरों की तुलना में बड़े आकार के होते हैं। इससे यह एकबार में 20 से 30 फिट तक की लम्बी छलांग लगा सकता है। बाघ के पैरों का निचला हिस्सा गद्देदारनुमा होता हैं। इस वजह से चुपचाप शिकार के नजदीक तक पहुँच जाता है। बाघ में 60 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से दौड़ने की क्षमता रहती है। बाघ की विशेषता है कि वह समूह में न रहकर अकेला रहने वाला प्राणी है। प्रजनन काल में ही नर और मादा इकट्ठे होते हैं। शावक का जन्म होने के बाद अपनी मां के साथ डेढ़ से दो साल तक रहकर शिकार करने की कला में पारंगत होता है। बाघ अपना शिकार बड़ी चतुराई और फुर्तीले अंदाज में और ज्यादाकर रात के समय करता है। सर्वविदित है कि यह झाड़ियों में घात लगाकर पीछे से अचानक शिकार पर हमला करता है। शरीर पर बनी धारियों की वजह से आसानी से झाडियों में घुल-मिल जाता है। यह अपने शिकार में गर्दन को निशाना बनाता है। प्रदेश का पहला टाइगर रिजर्व 1973 में कान्हा टाइगर बना। अभी प्रदेश में 6 टाइगर रिजर्व हैं। कान्हा, बांधवगढ़, संजय टाइगर रिजर्व, पन्ना, सतपुड़ा और पेंच टाइगर रिजर्व के रूप में मौजूद हैं। इनमें सबसे बड़ा सतपुड़ा टाइगर रिजर्व और सबसे छोटा पेंच टाइगर रिजर्व है। अभयारण्य के रूप में पचमढ़ी, पनपथा, बोरी, पेंच-मोगली, गंगऊ, संजय- दुबरी, बगदरा, सैलाना, गांधी सागर, करेरा, नौरादेही, राष्ट्रीय चम्बल, केन, नरसिंहगढ, रातापानी, सिंघोरी, सिवनी, सरदारपुर, रालामण्डल, केन घड़ियाल, सोन चिड़िया अभयारण्य घाटीगांव, सोन घड़ियाल अभयारण्य, ओरछा और वीरांगना दुर्गावती अभयारण्य के नाम शामिल हैं।

बंगाल में विधि का शासन के बजाय शासक का विधान

यह बड़ी विडंबना है कि रवींद्रनाथ टैगोर के प्रदेश में, जहां प्रख्यात कवि ने यह कल्पना की थी कि मस्तक हमेशा ऊंचा रहेगा, मस्तिष्क भयमुक्त होगा और जहां समाज टुकड़ों में नहीं विभक्त होगा, उसी राज्य में हजारों लोगों के साथ हत्या, दुष्कर्म, पलायन और धमकी इत्यादि की घटनाएं पिछले कुछ महीने में हुई हों। इन शब्दों में राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग यानी एनएचआरसी ने बंगाल में चुनाव बाद की हिंसक घटनाओं की जांच का निष्कर्ष निकाला है। विडंबना यह है कि ममता सरकार इस निष्कर्ष को सिरे से खारिज कर रही है। अभी दिल्ली आईं ममता बनर्जी ने चुनाव बाद हिंसा की घटनाओं को भाजपा का ड्रामा करार दिया। ज्ञात हो कि कलकत्ता हाई कोर्ट के आदेशानुसार एनएचआरसी ने बंगाल में चुनाव पश्चात हिंसा की घटनाओं की जांच के लिए एक समिति गठित की थी। समिति की सात टीमों ने बंगाल के सभी जनपदों का दौरा कर मामलों की गहराई से पड़ताल की। समिति को कुल 1,979 शिकायतें मिली थीं, जिनमें करीब 15,000 व्यक्ति प्रभावित हुए थे। जांच से जो तथ्य आए हैं, उन्हें किसी भी चश्मे से देखा जाए, वे अत्यंत भयावह हैं। देश में चुनावों के दौरान अनियमितताओं की शिकायत तो हम हमेशा से सुनते आए हैं, परंतु चुनाव परिणाम प्राप्त होने के बाद हिंसा के लिए कुख्यात प्रदेशों में भी शांति हो जाती थी और लोग नई सत्ता को स्वीकार कर लेते थे। किसी ने पक्ष में वोट डाला हो या विपक्ष में, बाद में कोई मारपीट नहीं होती थी। इसके उलट बंगाल में तृणमूल कांग्रेस के समर्थकों ने छांट-छांटकर उन लोगों के विरुद्ध हिंसात्मक कार्रवाई की, जिन्होंने अन्य पार्टी को वोट दिया। एनएचआरसी की रिपोर्ट के अनुसार बहुत बड़ी संख्या में आपराधिक तत्वों, जिन्हें राज्य का संरक्षण प्राप्त था, ने सुनियोजित और व्यापक पैमाने पर हिंसात्मक घटनाओं को अंजाम दिया। प्रतिशोध की भावना से हिंसा हुई, जिसमें सत्तारूढ़ दल द्वारा मुख्य प्रतिस्पर्धी दल को निशाना बनाया गया, जिससे हजारों लोगों का जनजीवन प्रभावित हुआ और उन्हें भयंकर आर्थिक संकट का सामना करना पड़ा। रिपोर्ट में यह भी लिखा है कि सदस्यों को यह देखकर दुख हुआ कि इन घटनाओं की स्थानीय नेताओं द्वारा निंदा करना तो छोड़िए, बल्कि मौके पर भी नहीं गए और ऐसे कोई कदम नहीं उठाए, जिससे लोगों का कष्ट कम हो सके। लोगों को उनके हाल पर छोड़ दिया गया। पुलिस के बारे में लिखा है कि वह या तो लापरवाह थी या इन सब कृत्यों में उसकी मिलीभगत थी। फलस्वरूप तृणमूल कांग्रेस के अराजक तत्वों के विरुद्ध कोई कार्रवाई नहीं की गई। संपूर्ण प्रदेश से जो शिकायतें प्राप्त हुई थीं, उनमें अधिकतम कूचबिहार (322) से मिलीं। दूसरे स्थान पर बीरभूम (314) रहा। इन शिकायतों का अगर वर्गीकरण किया जाए तो हत्या की 29 घटनाएं थीं, दुष्कर्म की 12, गंभीर चोट की 391, आगजनी की 940 और धमकी की 562। जांच कमेटी ने पाया कि पुलिस ने बहुत सी शिकायतों को दर्ज नहीं किया और जो शिकायतें दर्ज हुईं, उनमें घटनाओं की गंभीरता को देखते हुए गिरफ्तारियां बहुत कम हुईं। बहुत से मामलों में सही धाराएं नहीं लगाई गईं और ऐसा प्रतीत हुआ कि अपराध को कम करके दर्ज किया गया। सभी एफआइआर में 9,304 व्यक्तियों के विरुद्ध आरोप लगाए गए। इनमें केवल 1,354 (14 प्रतिशत) की गिरफ्तारी की गई।

प्रकाश सिंह, यूपी के पूर्व पुलिस महानिदेशक

दानिश सिद्दीकी की हत्या में छिपा संदेश

बलबीर पुंज,
राज्यसभा के पूर्व सदस्य और स्तंभकार

विडंबना देखिए कि दानिश जिस मजहब का अनुयायी था, उसके पैरोकारों ने ही इस्लाम के नाम पर उसकी हत्या की। दानिश की निर्मम हत्या के बाद उनकी जीवनी, विचार और उनके पेशेवर काम पर चर्चा होना स्वाभाविक था।

हाल में भारत के फोटो पत्रकार दानिश सिद्दीकी की अफगानिस्तान में तालिबान ने हत्या कर दी। दानिश इस इस्लामी देश के पुन: तालिबानीकरण को अपने कैमरे में कैद करने अफगानिस्तान में थे। उनकी नृशंस हत्या इस्लाम के नाम पर जिहाद करने वाले दानवों के हाथों हुई। इस दुर्भाग्यपूर्ण घटना ने भारतीय उपमहाद्वीप में रहने वाले मुस्लिम समाज में व्याप्त विसंगति और विरोधाभास को रेखांकित किया। एक भारतीय चैनल से बात करते अफगान सैन्य अधिकारी ने बताया कि दानिश को गोली मारने के बाद तालिबान को जैसे ही पता चला कि वह भारतीय है, उन्होंने उसके शव पर वाहन चढ़ाकर उसका सिर कुचल दिया। विडंबना देखिए कि दानिश जिस मजहब का अनुयायी था, उसके पैरोकारों ने ही इस्लाम के नाम पर क्रूरता के साथ उसकी हत्या की। दानिश की निर्मम हत्या के बाद उनकी जीवनी, विचार और उनके पेशेवर काम पर चर्चा होना स्वाभाविक था। दानिश ने भारत में कोविड-19 की दूसरी लहर के दौरान हिंदुओं की जलती चिताओं की तस्वीरें खींची थीं, जिसे लेकर अंतरराष्ट्रीय मीडिया संस्थानों सहित देशविरोधी शक्तियों ने वैश्विक अभियान चलाया और विपक्षी दल मोदी-विरोध के नाम पर दुनियाभर में देश की छवि पर कालिख पोतने में सहभागी बने। जब यह सब इंटरनेट मीडिया पर पुन: वायरल हुआ, तब तालिबान ने दानिश की हत्या पर खेद व्यक्त कर दिया। ऐसा करके तालिबान ने दुनिया को जो संदेश दिया, वह उतना ही स्पष्ट है, जितना उनका दानिश की मौत पर पछतावा। आखिर तालिबान ने दानिश की राष्ट्रीयता जानने पर उसका शव गाड़ी से क्यों रौंदाढ़ यह ठीक है कि दानिश एक मुस्लिम था, परंतु शायद तालिबान के लिए अधिक महत्वपूर्ण यह था कि वह 'काफिर' भारत का प्रतिनिधित्व कर रहा था। भारतीय उपमहाद्वीप में मुसलमानों का बड़ा वर्ग जहां स्वयं को अंतरराष्ट्रीय मिल्लत का हिस्सा मानता है तो दूसरी ओर पश्चिम एशिया और अरब देशों के मुसलमान उन्हें दोयम दर्जे का मुस्लिम मानते हैं। यह अकाट्य तथ्य है। भारतीय उपमहाद्वीप में आज जितने भी मुस्लिम हैं, उनमें 90 प्रतिशत से अधिक मुसलमानों के पूर्वज हिंदू, जैन, सिख और बौद्ध मत के अनुयायी थे, जिनका वर्तमान अरबी-फारसी संस्कृति से कोई प्रत्यक्ष संबंध नहीं है। वैसे भी मिल्लत की कल्पना ही अव्यावहारिक है। यदि इस्लाम के नाम पर मुसलमान इकट्ठा ही होते तो न दुनिया के 56 मुस्लिम बहुल देश या फिर घोषित इस्लामी गणराज्य अलग-अलग बंटते और न ही शिया-सुन्नी संप्रदाय केंद्रित मुस्लिमों या संबंधित देशों के बीच मजहबी संघर्ष होता। भारतीय उपमहाद्वीप के अधिकांश मुसलमान स्वयं को पश्चिम एशिया की अरबी-फारसी संस्कृति से जोड़कर विदेशी आक्रांताओं कासिम, गोरी, गजनी, बाबर, अब्दाली आदि में अपना नायक इसलिए खोजते है, क्योंकि वे सभी 'गजवा-ए-हिंद' के सूत्रधार थे। पाकिस्तान ने तो अपनी मिसाइलों और युद्धपोत का नामकरण क्रमश: बाबर, गोरी, गजनी, अब्दाली और टीपू सुल्तान आदि के नाम पर किया। भले ही अरब से भारत पर मजहबी आक्रमण के पश्चात कालांतर में भारतीय उपमहाद्वीप की वैदिक सांस्कृतिक सीमा सिकुड़ती गई हो और लोगों ने मजहबी तलवार के भय से इस्लाम स्वीकार कर लिया हो, किंतु उनकी मूल जड़ों में सनातन भारत के हिंदू-बौद्ध बहुलतावादी और पंथनिरपेक्षी रूपी जीवंत मूल्य आज भी शाश्वत हैं। इसी भारतीय पहचान से तालिबान और उसके वैश्विक मानसबंधु घृणा करते हैं। विश्व के इस भूखंड में पाकिस्तान उस विकृत चिंतन का सबसे बड़ा मूर्त रूप है। पाकिस्तान का वैचारिक अधिष्ठान जन्म से काफिर-कुफ्र की अवधारणा से प्रेरित है। इसी कारण 74 वर्षों से पाकिस्तान स्वयं को इस भू-भाग में उद्गमित और विकसित हिंदू-बौद्ध सांस्कृतिक जड़ों से काटने (इस्लाम-पूर्व सभ्यतागत प्रतीकों को जमींदोज करने सहित) और अरब-पश्चिम एशियाई संस्कृति से जोड़ने का असफल प्रयास कर रहा है। पाकिस्तान की आधिकारिक राष्ट्रीय भाषा उर्दू और अंग्रेजी है, किंतु वहां केवल सात प्रतिशत लोग ही उर्दू बोलते हैं और लगभग आधी आबादी पंजाबी। पाकिस्तान की तथाकथित पंथनिरपेक्ष छवि बनाने के लिए जिन्ना ने हिंदू शायर जगन्नाथ आजाद के एक उर्दू गीत को राष्ट्रगान बनाया, लेकिन उसका विरोध हुआ। परिणामस्वरूप उसे प्रतिबंधित कर एक फारसी गाने को राष्ट्रगान बना दिया, जिसमें उर्दू के नाम पर केवल 'का' शब्द का उपयोग हुआ है।

कृषि मंत्री पटेल ने मृतकों के परिजनों को सौंपे नियुक्ति पत्र

60 आश्रित परिवार के सदस्यों को मिली अनुकंपा नियुक्ति

संवाददाता, भोपाल

मंडी बोर्ड के लिए यह एतिहासिक क्षण है। यह दिन प्रदेश सरकार की संवेदनशीलता का परिचायक है। यह बात कृषि मंत्री कमल पटेल ने हाल ही में समन्वय भवन में आयोजित एक सादे समारोह में ड्यूटी के दौरान विभाग के मृतक कर्मचारियों के 60 परिजनों को अनुकंपा नियुक्ति पत्र प्रदान करते हुए कही। उन्होंने कहा कि विभाग में कार्यरत रहते हुए सामान्य मृत्यु और कोरोना से काल कवलित हुए कर्मचारियों के परिजनों को नियुक्ति प्रदान की गई है। इस अवसर पर मंडी बोर्ड की प्रबंध संचालक प्रियंका दास भी मौजूद थीं। मंत्री ने बताया कि मंडी बोर्ड के 53 कर्मचारी और बीज निगम के 7 कर्मचारियों के परिजनों को अनुकम्पा नियुक्ति दी गई है। इनमें से 16 कर्मचारियों की मृत्यु कोरोना के कारण हुई थी। उन्होंने बताया कि मंडी बोर्ड में 37 को सहायक ग्रेड-3 के पद पर और 16 को भृत्य/चौकीदार के पद पर नियुक्ति प्रदान की गई है।

पहले 49 को दी थी अनुकंपा

पटेल ने कहा कि विभाग द्वारा जुलाई माह में ही पहले भी मंडी बोर्ड 36 और कृषि विभाग में 13 लोगों को अनुकम्पा नियुक्ति प्रदान की जा चुकी है। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के निर्देशानुसार विशेष अभियान चलाकर अनुकंपा नियुक्तियां प्रदान की जा रही हैं, जिससे कि मृतक कर्मचारियों के परिजन को संबल प्रदान किया जा सके।

एक क्लिक पर हाजिर होंगे मंडी बोर्ड के निर्माण कार्य

» अब सभी निर्माण कार्यों की जानकारी होगी ऑनलाइन

» आयुक्त सह प्रबंध संचालक प्रियंका दास ने दिए निर्देश

संवाददाता, भोपाल

मंडी बोर्ड मध्यप्रदेश द्वारा किए जा रहे समस्त निर्माण कार्यों की जानकारी ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से ऑनलाइन प्रदर्शित की जाए। जिसमें निर्माण कार्य कहां हो रहा है, निर्माण करने वाले ठेकेदार, एजेंसी का नाम निर्माण की लागत, प्रशासकीय, तकनीकी स्वीकृति कार्य प्रारम्भ होने की तारीख और कार्य समाप्ति की तारीख, एनआईटी में उल्लेखित संपूर्ण जानकारी मय फोटोग्राफ के ऑनलाइन प्रदर्शित करना होगा।

यह बात मप्र राज्य कृषि विपणन मंडी बोर्ड की आयुक्त सह प्रबंध संचालक प्रियंका दास ने मंडी बोर्ड के कार्यपालन यंत्रियों की बैठक के दौरान कही। बैठक में मंडी बोर्ड के 13 तकनीकी संभाग कार्यालय के कार्यपालन यंत्रियों से निर्माण कार्यों की प्रगति की समीक्षा कर निर्माण कार्यों को गुणवत्तापूर्ण और समय-सीमा में पूर्ण कराने के निर्देश प्रबंध संचालक ने दिए।

यह रहे मौजूद: बैठक में मंडी बोर्ड के

अपर संचालक (वित्त) दिनेश द्विवेदी, अधीक्षण यंत्री, जगदीश श्रीवास्तव, पीसी तोमर के साथ 13 संभागों के कार्यपालन यंत्री मौजूद थे।

कैबिनेट में होगा निर्णय

» अभी केंद्र की प्राइस सपोर्ट स्कीम के तहत हो रही खरीद

» खरीदी के लक्ष्य दो लाख टन और बढ़ाने की उठी मांग

शिवराज सरकार अब अपने स्तर से भी खरीदेगी मूंग

संवाददाता, भोपाल। मध्य प्रदेश में किसानों को ग्रीष्मकालीन मूंग की उचित कीमत दिलाने के लिए शिवराज सरकार अपने स्तर से भी समर्थन मूल्य पर खरीद कर सकती है। अभी प्रदेश में केंद्र सरकार की प्राइस सपोर्ट स्कीम के तहत खरीद चल रही है। इसमें फिलहाल एक लाख 34 हजार टन मूंग खरीदने की अनुमति मिली है, जिसे दो लाख टन और बढ़वाने के प्रयास किए जा रहे हैं। यदि अनुमति मिल जाती है तो भी बड़ी मात्रा में मूंग बचेगी, जिसे राज्य सरकार अपने स्तर से खरीदने की तैयारी कर रही है। इसके लिए कृषि विभाग ने प्रस्ताव तैयार किया है, जिसे अंतिम निर्णय के लिए कैबिनेट भेजा गया है। इसमें करीब छह हजार करोड़ रुपए का प्रावधान सरकार को करना होगा।

1.34 लाख टन मूंग खरीदने की अनुमति

प्रदेश में इस बार 12 लाख टन से ज्यादा मूंग का उत्पादन अनुमानित है। केंद्र सरकार की प्राइस सपोर्ट स्कीम में कुल उत्पादन का 25 फीसद हिस्सा समर्थन मूल्य पर खरीदा जा सकता है। अभी प्रदेश को एक लाख 34 हजार टन मूंग समर्थन मूल्य (सात हजार 196 रुपए प्रति क्विंटल) पर खरीदने की अनुमति मिली है। इसमें से लगभग 99 हजार टन मूंग खरीदी जा चुकी है।

सरकार सक्रिय

खरीद की स्थिति को देखते हुए मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान केंद्रीय कृषि मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर से मुलाकात करके लक्ष्य बढ़ाने का अनुरोध कर चुके हैं। कृषि मंत्री कमल पटेल ने भी केंद्रीय कृषि मंत्री के साथ संयुक्त सचिव विवेक अग्रवाल से चर्चा की है। राज्य के कृषि उत्पादन आयुक्त केके सिंह को भी दिल्ली भेजा गया है।

बारिश से खरीदी प्रभावित

बारिश की वजह से खरीद का काम प्रभावित हुआ है। आने वाले दिनों में तेजी के साथ मूंग खरीदी जाएगी। इसके लिए पंजीकृत किसानों को एसएमएस भी भेजे जा चुके हैं। गुणवत्तायुक्त एक-एक दाना-दाना खरीदा जाएगा। इसके पहले भी चना, मसूर और सरसों समर्थन मूल्य पर खरीद करके किसानों को लाभान्वित करने का काम किया गया है।

इनका कहना है

मूंग खरीद का लक्ष्य केंद्र सरकार बढ़ाकर तीन लाख टन कर सकती है। इसके बाद भी यदि जरूरत पड़ी तो राज्य सरकार अपने स्तर से समर्थन मूल्य पर मूंग खरीदेगी। इसके लिए कैबिनेट में अंतिम निर्णय लेने के लिए प्रस्ताव भेजा गया है। इसमें पांच-छह हजार करोड़ रुपए लगने का अनुमान है। प्रदेश की शिवराज सरकार किसान हितैषी सरकार है।

कमल पटेल, कृषि मंत्री

होशंगाबाद के नाराज किसानों ने दिया धरना

इधर, होशंगाबाद में मूंग की खरीदी नहीं होने से किसानों ने सरकार के खिलाफ मोर्चा खोल दिया है। वहीं क्रांतिकारी किसान मजदूर संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष लीलाधर राजपूत ने हाल ही में तहसीलदार को प्रधानमंत्री के नाम दो ज्ञापन सौंपे। जिनमें 7 सूत्रीय मांगें रखी गई हैं। किसान नेताओं ने कहा कि यह दुर्भाग्य है कि किसानों को अपनी बात कहने के लिए धरना देना पड़े आंदोलन करना पड़े सरकारें किसानों की समस्याओं को सुलझाने की बजाए उन्हें परेशान होने के लिए छोड़ दे ऐसा नहीं होना चाहिए। किसानों की समस्याओं को प्राथमिकता से हल करना चाहिए।

किसानों को बरगलाया नहीं जाए

संगठन के जिलाध्यक्ष हरपाल सिंह सोलंकी ने कहा कि समर्थन मूल्य पर खरीदी में अव्यवसथाओं का माहौल बना रहता है। अधिकारी कर्मचारी ध्यान नहीं देते हैं। जिससे किसान परेशान होते रहते हैं। अब मूंग खरीदी की प्रक्रिया शुरू हुई और बीच-बीच में कई तरह की दिक्कतें आने लगी एसएमएस ही बंद हो गए, भुगतान ही बंद हो गए। इससे किसानों के सामने कई तरह की असुविधाएं आने लगी। इसी कारण शासन प्रशासन की नींद खोलने के लिए बरसात के मौसम में हमें धरना देने के लिए आना पड़ा है।

किसानों की प्रमुख मांगें

मूंग खरीदी के दौरान अचानक पोर्टल बंद होने से जिन किसानों के बिल नहीं बने हैं, प्राथमिकता से बनाए जाएं। सर्वर डाउन होने पर आफलाइन खरीदी की प्रक्रिया जारी रखी जाए। जिससे किसानों को असुविधा नहीं हो। जिन किसानों से मूंग खरीदी गई उनको तीन दिन के अंदर भुगतान किया जाए। छोटे बड़े सभी किसानों को एसएमएस भेजे जाएं, जिससे छोटे किसान कम लागत में अपनी उपज खरीदी केंद्रों तक आसानी से पहुंचा सकें। वर्षा होने पर मूंग में नमी होने पर नमी के मापदंड को बढ़ाया जाए। किसानों पर अकारण ग्रीडिंग का बोझ न डाला जाए। यूरिया व डीएपी खाद सोसायटी एवं बाजार में पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध कराया जाए।

एक हजार हेक्टेयर में बनेगा हैबिटेट, कूनो की घास लगेगी

वन विभाग सोन चिरैया अभ्यारण्य के लिए उसके प्राकृतिक वास के अनुसार तैयार करेगा क्षेत्र

-2011 में आखिरी बार दिखने वाली सोन चिरैया अब दोबारा दिखने की उम्मीद है।

सोन चिरैया का बढ़ेगा कुनबा

अवधेश डंडोतिया

मुरैना, सोन चिरैया की वापसी नए हैबिटेट में कराने की तैयारी है। वन विभाग एक हजार हेक्टेयर में सोन चिरैया का प्राकृतिक वास तैयार करेगा। 2011 में आखिरी बार दिखने वाली सोन चिरैया अब दोबारा दिखने की उम्मीद है। यह पूरा हैबिटेट फेंसिंग से कवर होगा और कूनो नेशनल पार्क से नए हैबिटेट के लिए घास भी लाई जाएगी। इस नए हैबिटेट को तिघरा, सुजवाया,पवा से आगे के क्षेत्र में तैयार किया जाएगा। इस क्षेत्र को पैच बतौर तैयार किया जाएगा,जिसमें मार्किंग भी कराई जाएगी। वन विभाग का दावा है कि इसका हैबिटेट इस तरह तैयार किया जाएगा कि सोन चिरैया अपने वास के लिए यहां मौजूदगी दर्ज कराएगी। वहीं सोन चिरैया को लेकर विभाग को मिलने वाले हर साल 75 लाख रुपए के बजट में से आधा ही खर्च हो पाता है। इस साल 35 लाख का बजट भी सरेंडर करना पडा है।

गायब हो गई सोन चिरैया

गौरतलब है कि सोन चिरैया अभयारण्य घाटीगांव को 1981 में अधिसूचित किया गया था। इसका क्षेत्रफल 512 वर्ग किमी था, लेकिन अब डी-नोटिफिकेशन की प्रक्रिया के बाद यह घट गया है। यह एरिया सिर्फ ग्वालियर जिले का है। 2008 में घायल अवस्था में सोन चिरैया को देखा गया था। इसके बाद 2011 में सोन चिरैया को देखा गया। इसे वन विभाग ने अपने रिकॉर्ड में भी दर्ज किया है। 2011 से लेकर अब तक इस अभयारण्य में सोन चिरैया की उपस्थिति नहीं देखी गई। इस अभयारण्य में सोन चिरैया के साथ साथ हिरण, चीतल, नीलगाय आदि जानवर भी हैं।

डी-नोटिफिकेशन में 35 गांव हुए थे बाहर

ग्वालियर और शिवपुरी जिले में आने वाले सोन चिरैया अभ्यारण्य के डी-नोटिफिकेशन की प्रक्रिया कुछ समय पहले ही की गई है। यहां सालों से सोन चिरैया नहीं दिखी और इसके बाद गांवों व उनके आसपास विकास कार्य रुक रहे थे। इसमें अधिकारों का विनिश्चयन किया गया और डी-नोटिफिकेशन की प्रक्रिया के बाद विकास कार्य व जमीनों का क्रय विक्रय शुरू हो गया। इससे खनन कारोबार, औद्योगिक क्षेत्र विकास, तिघरा फोरलेन, स्थानीय निर्माण कार्य और दूसरे विभागों के कार्य के रास्ते खुल गए। डी-नोटिफिकेशन में सोन चिरैया अभ्यारण्य के कुल 512 वर्ग किमी के क्षेत्र में से 111 वर्ग किमी क्षेत्र डी-नोटिफाई हो गया।

सोन चिरैया: एक मीटर होती है ऊंचाई

सोन चिरैया की ऊंचाई एक मीटर होती है और इसका वजन करीब 15 किलो होता है। इंटरनेशनल यूनियन फॉर कंजर्वेशन ऑफ नेचर के अनुसार सोन चिरैया विलुप्त होने की कगार पर है। यह उड़ने वाले पक्षियों में सबसे वजनदार है। यह राजस्थान का राज्य पक्षी है जो बेहद शर्मीला माना जाता है।सोन चिरैया राजस्थान में 150 की संख्या में है।

जैसलमेर से लाने का भी था प्लान

सोन चिरैया को जैसलमेर से लाने का भी प्लान बनाय गया था। इसमें यह बताया गया था कि जैसलमेर से सोन चिरैया के अंडे यहां लाए जाएंगे। यह प्लान आगे नहीं बढ़ सका। अब यहीं प्राकृतिक वास में सोन चिरैया की वापसी कराई जाएगी।

इनका कहना है

सोन चिरैया के लिए एक हजार हेक्टेयर में नया हैबिटेट तैयार कर रहे हैं, जिसमें कूनो नेशनल पार्क से घास मंगवाई जाएगी। पूरे क्षेत्र को फेंसिंग से कवर किया जाएगा। 2011 में आखिरी बार सोन चिरैया अभ्यारण्य में सोन चिरैया देखी गई थी। इसके बाद से कोई मौजूदगी नहीं मिली है

अभिनव पल्लव, डीएफओ, ग्वालियर

भोपाल में विदेशी कुत्ते, बिल्ली और बकरी भी गरीब

सात माह में 860 ने पशु चिकित्सालय में इलाज में छूट का लाभ भी लिया

संवाददाता, भोपाल

भोपाल में कुत्ते, बिल्ली और बकरियां भी बीपीएल यानी गरीब हैं। यही वजह है कि पिछले सात महीने में 860 से ज्यादा बीपीएल कार्डधारक कुत्ते, बिल्ली और बकरियों का इलाज राज्य पशु चिकित्सालय में सस्ती दरों पर किया गया है। लोग विदेशी नस्ल के उन पालतू कुत्ते-बिल्लयों और जानवरों का इलाज कराने के लिए बीपीएल कार्ड का इस्तेमाल कर रहे हैं, जिन्हें उन्होंने कई हजार में खरीदा हैं। उन लोगों की गिनती तक नहीं जो आर्थिक रूप से सक्षम हैं लेकिन उन्होंने बीपीएल कार्ड बनवा रखे हैं। ऐसे में लोग महंगे शौक के लिए पाले गए जानवरों का इलाज कम कीमत में कराने के लिए बीपीएल कार्ड और जनता के टैक्स का दुरुपयोग कर रहे हैं। अस्पताल में हर दिन 300 जानवर पहुंचते हैं, इनमें 4-5 बीपीएल होते हैं। ऐसे में हर महीने 125 से ज्यादा जानवर बीपीएल दर्ज होते हैं। इनमें सबसे ज्यादा कुत्ते और बिल्लियां होती है। ईद के आसपास बकरे भी बढ़ जाते हैं।

लेब्राडोर का इलाज बीपीएल से: अशोका गार्डन में रहने वाली वंदना श्रीवास्तव अपने बेटे के साथ दुपहिया वाहन से अपने चार महीने के लेब्राडोर को लेकर इलाज के लिए आई। पति किसी ट्रांसपोर्टर के यहां जॉब करते हैं। वंदना ने बताया कि दो महीने पहले ही उन्होंने 7000 रुपए में यह डॉग खरीदा है।

कुत्ते पर महीने के 2000 रुपए खर्च: दामखेड़ा के ईशान शर्मा ने अमेरिकिन बुलडॉग और लेब्राडोर के क्रॉस ब्रीड के इलाज के लिए बीपीएल कार्ड का इस्तेमाल किया है। जबकि पिता के पास 10 एकड़ जमीन है। खुद ईशान बताते हैं कि उनके कुत्ते के रहने-खाने पर महीने खर्च 2000 रुपए खर्च होता है।

बिल्ली का इलाज बीपीएल : जहांगीराबाद के साहब खान पेशे से शिक्षक हैं। घर में पाली बिल्ली गिर गई तो उसे दोपहिया वाहन से इलाज के लिए लेकर आए। उन्होंने बीपीएल कार्ड दिखाकर पर्चा बनवाया। ये पूछने पर आप बीपीएल हैं तो भड़क गए।

कौन है बीपीएल, यानी गरीब: वे लोग जिनके परिवार के हर सदस्य की मासिक आय 522 रुपए से अधिक ना हो। खुद का घर छत वाला नहीं हो। नाम पर 5 एकड़ से ज्यादा जमीन नहीं हो, 4 पहिया वाहन भी नहीं हो। ऐसे व्यक्ति का बीपीएल कार्ड बन सकता है। जिसका कार्ड है उसके जानवर को भी हितग्राही माना जाता है और पालतू को इलाज में छूट का लाभ देते हैं।

इनका कहना है

कई बार लोग महंगी गाड़ियों से विदेशी नस्ल के हजारों रुपए कीमत वाले कुत्तों का इलाज कराने बीपीएल कार्ड का उपयोग करते हैं। पूछताछ करें तो झगड़ने लगते हैं। ऐसे में बीपीएल कार्ड वालों को इलाज में रियायत देना पड़ती है।

- **डॉ. एचएल साहू,** प्रभारी संयुक्त संचालक, राज्य पशु चिकित्सालय

2022 तक 260 कस्टम प्रोसेसिंग केंद्र खोलने का लक्ष्य

केंद्रों की स्थापना के लिए आवेदन की तिथि बढ़ गई

इंदौर। कस्टम प्रोसेसिंग केंद्रों की स्थापना के लिए आवेदन की तिथि बढ़ गई है। संचालनालय कृषि अभियांत्रिकी, भोपाल द्वारा वर्ष 2021-22 में प्रदेश में कस्टम प्रोसेसिंग केंद्रों की स्थापना के लिए आवेदन पत्रों के आमंत्रण की सूचना विज्ञापन द्वारा समाचार पत्रों में प्रकाशित की गयी थी, जिसमें ऑनलाइन आवेदन प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि 4 अगस्त 2021 थी। योजनांतर्गत अब ऑनलाइन आवेदन करने की अंतिम तिथि को बढ़ाकर 11 अगस्त कर दिया गया है। अब 11 अगस्त तक आवेदन प्रस्तुत किए जा सकते हैं। ऑनलाइन आवेदन के उपरांत आवेदकों के मूल अभिलेखों का सत्यापन एवं अन्य तिथियों की जानकारी विभागीय वेब साइट पर देखी जा सकेंगी।

हर जिले में खुलेंगे पांच केंद्र

प्रदेश के हर जिले में पांच कस्टम प्रोसेसिंग केंद्र खोलने का लक्ष्य है। 2022 तक 260 केंद्र खोलने का लक्ष्य है। बैंक ऋण आधार पर कस्टम प्रोसेसिंग केंद्र खोलने के लिए किसान कृषि अभियांत्रिकी संचालनालय में ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। केंद्र प्रदेश के सभी जिलों में खोले जाएंगे। इसके लिए कम से कम दस लाख और अधिक से अधिक 25 लाख खर्च आएगा। जो किसान ये खोलना चाहते हैं उन्हें 10 लाख तक का अनुदान दिया जाएगा।

लॉटरी से होगा किसानों का चयन

हितग्राही एग्रीकल्चर इन्फ्राट्रक्चर फंड के लाभ प्राप्त करने के भी पात्र होंगे। एग्रीकल्चर इंफ्रास्ट्रक्चर फंड योजना से प्रोजेक्ट को 3 प्रतिशत की दर से ब्याज अनुदान और केंद्र सरकार की गारंटी होगी। संचालनालय ने आवेदकों को सूचित किया है कि वे दोनों योजनाओं में आवेदन प्रस्तुत कर सकतें हैं, परन्तु लॉटरी में दोनों में चयन होने की स्थिति में केवल एक ही योजना में लाभ मिलेगा।

केंद्र सरकार तय करेगी मप्र के लिए फसल बीमा फॉर्मूला

» प्रदेश सरकार ने दिया पिछले साल की तरह सरप्लस शेयरिंग व्यवस्था लागू रखने का प्रस्ताव

» 15 अगस्त के बाद खरीफ फसलों के लिए प्रारंभ हो सकता है बीमा प्रीमियम जमा होना

संवाददाता, भोपाल

प्रदेश में खरीफ फसलों का फसल बीमा किस फॉर्मूले के तहत होगा, यह केंद्र सरकार की अनुमति से तय होगा। कृषि विभाग ने इसके लिए पिछले साल की सरप्लस शेयरिंग व्यवस्था को बरकरार रखने का प्रस्ताव दिया है। इसमें बीमा कंपनी की देनदारी कुल प्रीमियम के 80 से 110 प्रतिशत रखी गई है। प्रीमियम के 80 फीसद से कम दावा (क्लेम) भुगतान की स्थिति में कंपनी शासन को अतिरिक्त राशि वापस करेगी। वहीं, 110 फीसद से ज्यादा भुगतान होने पर अतिरिक्त वित्तीय भार कंपनी की जगह सरकार उठाएगी। बताया जा रहा है कि बीमा को लेकर फॉर्मूला जल्द ही तय हो सकता है, क्योंकि खरीफ फसलों की बोवनी अगस्त के दूसरे सप्ताह तक पूरी होने की संभावना है। प्रदेश में पिछले साल 44 लाख किसानों ने खरीफ फसलों के लिए बीमा कराया था। इस बार भी सरकार ज्यादा से ज्यादा किसानों का बीमा कराकर उन्हें सुरक्षा प्रदान करना चाहती है। इसके लिए मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने जुलाई के दूसरे सप्ताह में केंद्रीय कृषि मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर से मुलाकात करके सरप्लस शेयरिंग व्यवस्था को लागू रखने की अनुमति देने के अनुरोध किया था।

पिछले साल कम थी दर

प्रीमियम की दर कम रहती है और इससे केंद्र और राज्य सरकार को कम राशि देनी पड़ती है। विभागीय अधिकारियों का कहना है कि पिछले साल खरीफ और रबी फसलों के लिए बीमा कंपनी का चयन करने के लिए तीन बार निविदा बुलाई थी, लेकिन प्रीमियम की दर काफी अधिक आ रही थी। इसे देखते हुए सरप्लस शेयरिंग व्यवस्था लागू की थी। पिछले साल खरीफ फसल में अतिवर्षा के कारण किसानों को जो नुकसान हुआ था, उसका बीमा दिया जाएगा। यह राशि पांच हजार करोड़ से अधिक रहने की संभावना है।

इनका कहना है

केंद्रीय कृषि मंत्रालय से अनुरोध किया है कि प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के क्रियान्वयन के लिए जल्द अनुमति दी जाए, क्योंकि इसके बाद बीमा कंपनियों का चयन करने की प्रक्रिया करनी होगी।

कमल पटेल, कृषि मंत्री

जंगल में कौन आया अब तुरंत पता चलेगा

एम-स्ट्राइप्स एप के जरिए वन विभाग करेगा पेट्रोलिंग

संवाददाता, भोपाल

वन क्षेत्र में कौन-कौन आया, अब इसकी जानकारी तुरंत हो जाएगी। क्योंकि देश के विभिन्न राज्यों के नेशनल पार्कों की तर्ज पर अब मप्र में भी वन विभाग नेशनल टाइगर कंजर्वेशन अथारिटी की ओर से 2010 में तैयार किए गए एम-स्ट्राइप्स (मानीटरिंग सिस्टम फार टाइगर इन्टेंसिव प्रोटेक्शन एंड ईकोलाजिकल स्टेटस) साफ्टवेयर पर पेट्रोलिंग करेगा। इसमें वन अमले की पेट्रोलिंग एंट्री होती है, जिसमें जियो टैगिंग फीड पहले से ही होती है और इकोलाजिकल सिस्टम से लेकर वाटर बॉडीज आदि हर सूक्ष्म एंट्री की जाती है। उदाहरण बतौर जैसे जानवरों का कोई झुंड नई जगह दिखा, नई वाटर बॉडी उजर आई, कोई नई प्रजाति कहीं अप्रत्याशित स्थान पर दिखी। सबकुछ इस साफ्टवेयर में लोड किया जाता है। यह एप की तरह कार्य करता है। देश के बड़े नेशनल पार्कों में इसी सिस्टम पर काम होता है। इसमें जीपीएस सिस्टम और रिमोट सेंसिंग का उपयोग होता है। इस सिस्टम पर अमले को काम कराने के लिए ट्रेनिंग भी शुरू करा दी गई है।

ज्ञात रहे कि एम-स्ट्राइप्स सिस्टम को देशभर में विभिन्न टाइगर रिजर्व और नेशनल पार्क में उपयोग करते हैं। एमएसटीआरआइपीईएस एम स्ट्राइप्स ग्लोबल पोजिशनिंग सिस्टम (जीपीएस), जनरल पैकेट रेडियो सर्विसेज (जीपीआरएस), और रिमोट सेंसिंग का उपयोग करता है, ताकि क्षेत्र से जानकारी एकत्रित की जा सके, आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी (आइटी) आधारित उपकरणों का उपयोग करके एक डेटाबेस बनाया जा सके, जीआइएस और सांख्यिकीय का उपयोग करके जानकारी का विश्लेषण किया जाता है।

हर स्थिति की पेट्रोलिंग एंट्री की जाएगी

वन विभाग के अधिकारियों ने बताया कि एम स्ट्राइप्स को यहां पहली बार प्रयोग में लाया जा रहा है। इसमें वन विभाग का अमला पेट्रोलिंग के दौरान एक-एक चीज और स्थिति की एंट्री की जाएगी। पेट्रोलिंग माड्यूल विभिन्न प्रकार के गश्ती कर्तव्यों के दौरान पेट्रोलिंग ट्रैक लाग, जियोटैग्ड तस्वीरों के साथ अपराध के दृश्य और फील्ड स्टाफ द्वारा किए गए महत्वपूर्ण अवलोकनों का एक स्थानिक डेटाबेस रखा जाएगा। फोन एप सेलुलर नेटवर्क कनेक्टिविटी में देश भर में वास्तविक समय में सभी पेट्रोलिंग के दृश्य की अनुमति देता है। यह गार्ड को आपात स्थिति (एसओएस) फंक्शन के मामले में निर्दिष्ट फोन नंबरों पर जियो टैग्ड स्थान डेटा भेजने की भी अनुमति देता है। फोन के इनबिल्ट जीपीएस और प्रीलोडेड बेस मैप्स का उपयोग करके मोबाइल एप बिना फोन नेटवर्क वाले क्षेत्रों में काम करना जारी रखेगा।

यह भी हैं प्रावधान

एम-स्ट्राइप्स में मानव-वन्यजीव संघर्ष विवरण के डेटा रिकॉर्डिंग, जियो टैगिंग व स्थानिक विश्लेषण दर्ज किया जाएगा। एप में मनुष्यों पर हमलों, पशुओं पर हमले, फसल क्षति व संपत्ति के नुकसान का विवरण दर्ज करने का प्रविधान है। स्थान पर यह जानकारी, स्थानिक रूप से संदर्भित फोटो-साक्ष्य और संघर्ष की सीमा के साथ वन्यजीव प्रबंधकों को उचित हस्तक्षेप के साथ संघर्ष को कम करने की दिशा में काम किया जाता है।

दालों की कीमत पर नियंत्रण के लिए सरकार ने स्टाक लिमिट की तय

प्रदेश में अब पांच टन दाल का भंडारण कर सकेंगे विक्रेता

थोक व्यापारी पांच सौ टन, मिलर उत्पादन क्षमता का 50 फीसद ही रख सकेंगे

संवाददाता, भोपाल

प्रदेश सरकार ने दालों की कीमतों को नियंत्रित करने के लिए अधिकतम भंडारण सीमा (स्टाक लिमिट) तय कर दी है। अब फुटकर विक्रेता पांच टन से अधिक दाल नहीं रख सकता है। थोक व्यापारी के लिए यह सीमा पांच सौ टन रहेगी।

वहीं, मिलर छह माह के उत्पादन या वार्षिक मिलिंग क्षमता का पचास फीसद ही भंडार रख सकेंगे। दालों के आयात पर यह प्रविधान लागू नहीं होंगे। तुअर सहित अन्य दालों की कीमतों को देखते हुए केंद्र सरकार ने अधिकतम भंडारण सीमा तय की है। इसे देखते हुए खाद्य नागरिक आपूर्ति विभाग ने भी आवश्यक वस्तु व्यापारी (नियंत्रण) आदेश 2021 जारी किया है। इसके दायरे में मूंग और डालर चना को छोड़कर सभी दालें आएंगी।

किसान रहेंगे मुक्त

किसान को भी इससे मुक्त रखा गया है। व्यापारियों को दैनिक पंजी रखनी होगी। इसमें प्रारंभिक भंडारण की स्थित, आवक और विक्रय की स्थिति के बतानी होगी। विभागीय अधिकारियों ने बताया कि प्रत्येक व्यापारी को विक्रय के लिए संग्रहित करके रखी वस्तु को रोककर नहीं रखेगी।

कलेक्टर बताएंगे स्थिति

कोविड-19 के कारण लॉकडाउन की स्थिति में संस्थान बंद रहने पर इस प्रावधान से छूट रहेगी। कलेक्टर को माह में दो बार दालों के भंडारण की स्थिति बतानी होगी। भंडारण की जांच खाद्य विभाग के अधिकारियों के साथ कलेक्टर द्वारा नामांकित अधिकारी कभी भी कर सकेंगे।

सावन माह में आलू की खपत ज्यादा...भाव बढ़े

भोपाल। सावन माह में ज्यादा लोग उपवास करते हैं। इसलिए आलू की खपत ज्यादा होती है। करोंद मंडी में आलू के भाव में बढ़ोतरी हो गई है। इसके अलावा हरी सब्जियों व फल के भाव में भी तेजी आई है। मंडी में आलू के साढ़े 4 हजार कट्टे की आवक हुई है। बेस्ट क्वालिटी के आलू 900 से 950 रुपए प्रति क्विंटल, गुल्ला 550 से 650 तथा आगरा के आलू 800 से 900 प्रति क्विंटल मिल रहे हैं। इसके अलावा टमाटर के भाव में भी तेजी आई है। प्रति कैरेट 600 में मिल रहे हैं। फल में अनार, मौसम्मी, केला, सेवफल, अंगूर सहित अन्य फल के भाव में तेजी आई है। नारियल पानी के भाव भी पहले की अपेक्षा काफी बढ़ गए हैं। हरी सब्जियों में भिंडी, गिलकी, टेंसी, तुरई, सुरजना फली, परवल, चवला फली, धनिया और मिर्ची सहित अन्य सब्जियों के भाव में पहले की अपेक्षा काफी तेजी आई है।

» प्रदेश में भूमि संबंधी दस्तावेजों में भूल सुधार अभियान छेड़ेगी राज्य सरकार

» मुख्यमंत्री शिवराज सिंह बोले-नकली दूध के विरुद्ध शुरू होगा सघन अभियान

अगस्त में होगा विशेष रिकॉर्ड शुद्धिकरण

संवाददाता, भोपाल

सरकार भूमि संबंधी दस्तावेजों में भूल सुधार के लिए अगस्त में विशेष रिकॉर्ड शुद्धिकरण सप्ताह आयोजित करेगी। जिसमें कम्प्यूटीकरण के समय रिकॉर्ड में हुई गलतियों को सुधारा जाएगा। इसके लिए किसानों से कोई शुल्क नहीं लिया जाएगा। यह बात मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कही। वे मंत्रालय में किसान मंच के पदाधिकारियों से कृषि, राजस्व, बिजली, सहकारिता, पशुपालन विभाग से संबंधित दिन प्रतिदिन के कार्यों में आने वाली समस्याओं के संबंध में बात कर रहे थे। मुख्यमंत्री ने निर्देश दिए कि अविवादित नामांतरण के लिए बनाई गई नई व्यवस्था की जनसामान्य को जानकारी देने के लिए जागरुकता अभियान चलाया जाए। मुख्यमंत्री ने कहा कि हक त्याग के मामलों में राजस्व एवं पंजीयक विभाग परस्पर समन्वय से स्पष्ट व्यवस्था बनाए और इस संबंध में प्रचार अभियान चलाएं।

प्रतिनिधियों की चर्चा के मुख्य बिंदु

- रजिस्ट्री होते ही नामांत्रित दस्तावेज दें।
- पंचायत के प्रस्ताव पर पटवारी फौती नामांतरण समयसीमा में करें।
- पटवारी की जवाबदारी तय करें, ताकि वे ही कंप्यूटर रिकार्ड में दर्ज करें।
- अविवादित बंटवारा आपसी सहमति से नोटरी कराने पर तहसीलदार करें।
- खसरा बी-एक की गलतियां विभाग सुधारे।
- खेतों के परंपरागत रास्तों का नक्शे में अंकन किया जाए।
- आरआई एवं पटवारियों को गृह तहसील में पदस्थ न करें।
- पटवारियों से राजस्व के अलावा अन्य काम न कराएं। प्रोटोकॉल के लिए अलग से अधिकारी नियुक्त करें।
- पहाड़ों पर वहीं गिट्टी उत्खनन की अनुमति दें, जिस जगह का उपयोग जल संग्रह के लिए हो सके।
- सहकारी संस्थाएं सारे काम कंप्यूटरीकृत करें और पारदर्शिता से।

सीमांकन की मशीनें बढ़ाएं

सीमांकन के लिए मशीनें बढ़ाई जाएं। जले ट्रांसफार्मर की जगह अधिक क्षमता के ट्रांसफार्मर लगाएं। बिजली संबंधी शिकायतें सब स्टेशन स्तर पर शिविर लगाकर निराकृत करें। प्रदेश में नकली दूध के विरुद्ध सघन अभियान चलाया जाएगा। मंडियों में मानक परीक्षा मशीनें लगाई जाएंगी। लहसुन, प्याज की सफाई करने वाली महिलाओं को वे सुविधाएं दें, जो हम्मालों को मिलती हैं। सहकारी संस्थाओं की गंभीर शिकायतों की जांच अब प्रशासनिक अधिकारी करेंगे।

डब्ल्यूडब्ल्यूई रेसलर सौरभ गुर्जर पहुंचे गोशाला, युवाओं को दिया संदेश, बोले

गायों को सिर्फ माता बोलने से कुछ नहीं होता, इनकी रक्षा भी करिए

दिव्या मिश्रा

ग्वालियर। गायों को सिर्फ माता बोलने से कुछ नहीं होता, मां शब्द, इसके विचार व इस्तेमाल को हमें स्वीकारना होगा। हम कुत्ते पालते हैं, कई ब्रीड पालते हैं, यह अब फैशन में आ गया है। मगर हम वह भूल गए जो हमारे दादा, परदादा करते थे। गायों के प्रति सहानुभूति रखिए, उनका सम्मान कीजिए। सड़क पर वाहन चला रहे हैं, तो ठीक से चलाएं, गायों की रक्षा कीजिए। यह बात हाल ही में लाल टिपारा गोशाला पहुंचे डब्ल्यूडब्ल्यूई रेसलर सौरभ गुर्जर ने संवाददाताओं से चर्चा के दौरान कही। युवाओं को संदेश देते हुए सौरभ ने कहा कि युवा ही देश की धड़कन है। भारत एक युवा देश है। युवाओं को थोड़ा गंभीर होना होगा। अपनी सेहत के प्रति, अपने देश की संस्कृति व सभ्यता के प्रति। हम आगे बढ़ते हैं तो अपनी संस्कृति व सभ्यता को भूल जाते हैं।

मैं टीका लगा कर लड़ता हूं

मैं यूएस में जाकर डब्ल्यूडब्ल्यूई लड़ता हूं, वहां मैंने अपनी संस्कृति को नहीं छोड़ा। वहां मुझे बहुत मुश्किलें आ रही हैं। उन्होंने कहा कि मैं टीका लगाकर क्यों लड़ता हूं, क्यों रुद्राक्ष पहनता हूं। मेरे पास काम नहीं होगा, चलेगा। मगर मैं अपनी संस्कृति सभ्यता को नहीं छोड़ सकता। युवाओं से मेरा कहना है कि अपनी जड़ों को न भूलें, हमारी संकृति-सभ्यता ही हमारी जड़ें हैं, जिसे हम भूल जाएंगे तो आगे नहीं जा पाएंगे।

मेरी गाय मर गई थी तो हम उसकी समाधि पर चढ़ाते थे फूल

बचपन का एक किस्सा सुनाते हुए सौरभ ने कहा कि जब में छोटा था तो एक गाय मर गई थी, पहले गाय को मर जाने के बाद गांव से बाहर फेंक आते थे, मगर मैं और मेरी बहन इतना रोये कि मेरे दादा ने एक गड्ढा खोदकर उसमें गाय के शव को गाड़ा और चबूतरा बना दिया। हम कई दिनों तक उस पर फूल चढ़ाते रहे। सौरभ ने पर्यावरण संरक्षण की अपील करते हुए कहा कि बारिश का मौसम है, खूब पौधे लगाइए। सभी ने देखा है कि हमें कोरोना के कारण आक्सीजन की कितनी कमी हुई थी। हम अभी भी नहीं सुधरे तो कभी नहीं सुधर सकते।

मुरैना के प्रभारी मंत्री भारत सिंह कुशवाह समीक्षा बैठक में बोले-

जंगल में ही रोका जाए बारिश का पानी, वन्यजीवों को होगा फायदा

संवाददाता, मुरैना

बारिश का पानी जंगल की जमीन पर ही रुके तो जंगल भी सुरक्षित रहेंगे और जंगल में रहने वाले जीव जंतु और जानवर भी जीवित रहेंगे। इसलिए बरसात के पानी को जंगल में ही सहेजा जा सके, ऐसे प्लान बनाए जाएं। यह बातें प्रभारी मंत्री भारत सिंह कुशवाह ने कहीं। वे हाल ही में बाढ़ से बचने की तैयारियों की ऑनलाइन समीक्षा बैठक में कलेक्टर, एसपी सहित अन्य अफसरों से चर्चा कर रहे थे। प्रभारी मंत्री ने कहा कि दो दिन की लगातार बारिश के कारण कई नदियां उफान पर हैं। इसलिए उन नदियों का पानी एकत्रित होकर चंबल नदी में आया तो कहीं बाढ़ के हालात न बनें, इसलिए अधिकारी उन गांव को चिन्हित करें जिन गांव में चंबल का पानी आने का खतरा बना रहता है।

अधिकारियों की बनाएं टीम

मंत्री ने कहा कि पुलिस थानावार डयूटी लगा दी जाए और राजस्व अधिकारियों की टीम बना दी जाए। इसके अलावा होमगार्ड कमांडेंट के माध्यम से टॉर्च, रस्सा, बोट, गोताखोर आदि तैयारी पूरी कर लें। सात अगस्त को अन्नोत्सव का कार्यक्रम रखा गया है। इस कार्यक्रम में पात्र व्यक्ति को राशन उपलब्ध हो जाए, कोई भी गरीब राशन के बिना भूखा न सोए।

अभी बाढ़ की संभावना नहीं

बैठक में कलेक्टर बी कार्तिकेयन ने बताया कि जिले में अभी तक 172.8 मिलीमीटर वर्षा दर्ज की गई है। जबकि पिछले वर्ष इसी अवधि में 245 मिमी वर्षा दर्ज की गई थी। जो गत वर्ष से इस वर्ष 72.2 मिमी वर्षा कम है। चंबल नदी का जल स्तर 129 मीटर पर चल रहा है, जबकि चंबल नदी के खतरे का निशान 138 मीटर पर है।

आवश्यकता

भोपाल, इंदौर, उज्जैन, सागर और मुरैना से प्रकाशित

जागत गांव हमार

कृषि और पंचायत पर आधारित साप्ताहिक समाचार पत्र के लिए जिला, जनपद स्तर पर संवाददाता चाहिए।

संपर्क करें

जबलपुर, प्रवीण नामदेव-9300034195
शहडोल, गोपाल दास बंसल-9131886277
नरसिंहपुर, प्रहलाद कौरव-9926569304
हरदा, राजेन्द्र बिल्लौरे-9425643410
विदिशा, अवधेश दुबे- 9425148554
सागर, अनिल दुबे-9826021098
राहतगढ़, भगवान सिंह प्रजापति-9826948827
दमोह, बंटी शर्मा -9131821040
टीकमगढ़, नीरज जैन -9893583522
राजगढ़, गजराज सिंह मीणा -9981462162
मुरैना, अवधेश दण्डोतिया -9425128418
शिवपुरी, खेमराज मौर्य-9425762414
भिण्ड- नीरज शर्मा-9826266571
खरगौन, संजय शर्मा-7694897272
सतना, दीपक गौतम-9923800013
रीवा-धनंजय तिवारी-9425080670
रतलाम, अमित निगम-70007141120
झाबुआ-नोमान खान-8770736925

कार्यालय का पता:- लाजपत भवन प्रथम तल, आईसीआईसीआई बैंक के पास, एमपी नगर, जोन-1, भोपाल, मप्र,
संपर्क करें- 07554064144, 9229497393, 9425048589

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक अजय कुमार द्विवेदी द्वारा जय माता प्रिंटर्स, मं.नं.1, पेमदीपुरा बापू कालोनी के पास चिकलोद रोड, जहांगीराबाद, भोपाल(मप्र) से मुद्रित एवं एमआईजी 30, शिवकल्प, अयोध्या बाईपास भोपाल, मप्र से प्रकाशित। संपादक: अजय कुमार द्विवेदी, स्थानीय संपादक- **सतीश उपाध्याय, संपर्क** -9229497393, 9425048589, ईमेल:- jagatgaon.bpl@gmail.com (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल होगा)